

शोधार्थी: राजीवरंजन

शोध-निर्देशक: प्रोफेसर अब्दुल बिस्मिल्लाह

विभाग: हिंदी विभाग

विषय: छायावादेतर काव्य में राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना का अध्ययन

शोध-सार

छायावादेतर काव्य के आधुनिक काल के तीसरे उत्थान की कविता है। हिंदी साहित्य के इतिहास में इस दौर को छायावाद युग के रूप में दर्ज किया जाता है। इस युग का नामकरण छायावादी कविता को केंद्र में रखकर किया गया है जिसमें मुख्यतः पंत, प्रसाद, निराला और महादेवी वर्मा की कविताएँ ही शामिल हैं। ऐसे में वे कवि प्रायः उपेक्षित रह गए हैं, जो छायावाद युग में रचनारत होते हुए भी छायावाद की प्रवृत्ति रक्षित-चौहद्दी के भीतर नहीं अँटते। छायावाद युग (1918 ई.-1936 ई.) में रचनारत किंतु छायावादी चतुष्टयी से इतर इन कवियों को ही छायावादेतर कवि और उनकी कविताओं को छायावादेतर काव्य कहा गया है।

छायावादेतर काव्य की मुख्यतः दो धाराएँ हैं; पहली राष्ट्रीय-सांस्कृतिक धारा और दूसरी प्रेम और सौंदर्य की धारा। पहली धारा का प्रतिनिधित्व जहाँ माखनलाल चतुर्वेदी, दिनकर, नवीन और सुभद्रा कुमारी चौहान करते हैं, वहीं बच्चन, अंचल और नरेंद्र शर्मा को प्रेम और सौंदर्य की धारा का प्रतिनिधि माना जा सकता है। नेपाली की कविताएँ इन दोनों धाराओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। इनके अतिरिक्त बहुत बड़ी संख्या उन कविताओं की भी है, जो उस दौर की ब्रिटिश औपनिवेशिक सत्ता द्वारा प्रतिबंधित कर दी गई थीं। ये कविताएँ अपनी प्रवृत्तियों में राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्य-धारा के अत्यंत निकट हैं।

छायावादेतर काव्य का स्वर कहीं छायावादी कविता से विषम है, तो कहीं प्रभावापन्न। यहाँ छायावादी कविता की तरह रहस्यानुभूति, अतींद्रियता, प्रेम और सौंदर्य की अमूर्तता या प्रेम तथा सौंदर्य की सूक्ष्मता और अमूर्तता के साथ ही उन सौंदर्यशास्त्रीय

प्रतिमानों को भी उतना महत्त्व नहीं मिला है, जितना कि जीवन सहज और स्वाभाविक अभिव्यक्ति तथा अपने समय के सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्य को। हाँ स्वच्छंदता और राष्ट्रीय मुक्ति तथा मानव-मुक्ति की आकांक्षा की अभिव्यक्ति दोनों ही कविताओं में हुई है। छायावादी कविता का स्वर जहाँ अधिक सांद्र है, वहीं छायावादेतर काव्य का भाव-तरल।

आधुनिक भारत में राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना का विकास नवजागरण की पृष्ठभूमि पर हुआ। इसमें सामाजिक-सांस्कृतिक आंदोलनों की केंद्रीय भूमिका रही। हिंदी साहित्य में इसका बीज-रूप भारतेन्दु युगीन कविताओं में उपस्थित है जो क्रमशः विकसित होते हुए, छायावादयुग में अधिक निखर आया है। छायावादेतर काव्य में राष्ट्र एक अमूर्त भावात्मक सत्ता नहीं, बल्कि अपने भौगोलिक और राजनैतिक संदर्भों के साथ-साथ वहाँ निवास करने वाली जनता का आवास भी है। इसलिए वहाँ राष्ट्रीय मुक्ति और सामाजिक मुक्ति एक दूसरे के पर्याय हैं। छायावादेतर काव्य में ब्रिटिश औपनिवेशिक सत्ता द्वारा थोपी गयी राजनीतिक प्रभुता और उसके शोषण-चक्र के साथ-साथ सामाजिक गैर-बराबरी और शोषण का भी विरोध हुआ है। ये कविताएँ विषमता, शोषण और अत्याचार के प्रत्येक रूप के विरुद्ध खड़ी हैं। इनमें उन सभी पक्षों का विरोध है जो मानवीय गरिमा और मानव-हित के विरुद्ध हैं। इसलिए इनकी सांस्कृतिक-दृष्टि भी अमूर्त ना हो कर मानववादी है। छायावादेतर कवियों ने संस्कृति को अपने समकालीन संदर्भों में रखकर देखा है।

छायावादेतर काव्य में अतीत के गौरव-गान के बजाय वर्तमान समाज की विसंगतियों की समझ स्वतंत्रता, समता और भाईचारा पर अधिक बल दिया गया है। इसमें वर्तमान की स्थितियों से मुक्त होने के लिए स्वर्णिम अतीत की छाया नहीं ली गयी है, बल्कि अतीत का प्रयोग भी मानवता के उदात्त तत्त्वों की पहचान और वर्तमान की अमानवीय स्थितियों के प्रत्याख्यान के लिए हुआ है। यहाँ सत्य, अहिंसा, त्याग जैसे परंपरागत मूल्यों की स्वतंत्रता, समता और विश्वबंधुत्व जैसे आधुनिक मूल्यों के साथ संगति बैठाते हुए, भारत की राष्ट्रीय मुक्ति और सांस्कृतिक जागरण आह्वान किया गया है। भारतीयता और मानवता के बीच यहाँ ध्वनि-प्रतिध्वनि जैसा संबंध है।